Sample

# ऊँ गं गणपतये नम:

शुभ 卐 लाभ

जन्मपत्रिका

**Sample**

**Astroinsight**
Delhi NCR
www.astroinsight.in
E-mail : support@astroinsight.in

# सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

Sample

| | |
|---|---|
| लिंग | पुल्लिंग |
| **जन्म तिथि** | **21/11/1976** |
| दिन | रविवार |
| **जन्म समय** | **14:15:15 घंटे** |
| इष्ट | 18:36:11 घटी |
| **स्थान** | **Delhi** |
| देश | India |

| | |
|---|---|
| अक्षांश | 28:39:00 उत्तर |
| रेखांश | 77:13:00 पूर्व |
| मध्य रेखांश | 82:30:00 पूर्व |
| स्थानिक संस्कार | -00:21:08 घंटे |
| ग्रीष्म संस्कार | 00:00:00 घंटे |
| स्थानिक समय | 13:54:07 घंटे |
| वेलान्तर | 00:14:06 घंटे |
| साम्पातिक काल | 17:56:02 घंटे |
| सूर्योदय | 06:48:46 घंटे |
| सूर्यास्त | 17:25:13 घंटे |
| दिनमान | 10:36:27 घंटे |
| सूर्य स्थिति(अयन) | दक्षिणायन |
| सूर्य स्थिति(गोल) | दक्षिण |
| ऋतु | हेमन्त |
| सूर्य के अंश | 05:38:17 वृश्चिक |
| लग्न के अंश | 05:02:54 मीन |

**अवकहड़ा चक्र**

| | |
|---|---|
| लग्न–लग्नाधिपति | मीन – गुरु |
| **राशि–स्वामी** | **वृश्चिक – मंगल** |
| **नक्षत्र–चरण** | **विशाखा – 4** |
| नक्षत्र स्वामी | गुरु |
| योग | अतिगण्ड |
| करण | नाग |
| गण | राक्षस |
| योनि | व्याघ्र |
| नाड़ी | अन्त्य |
| वर्ण | विप्र |
| वश्य | कीटक |
| वर्ग | सर्प |
| युँजा | मध्य |
| हंसक | जल |
| जन्म नामाक्षर | तो–तोरल |
| पाया(राशि–नक्षत्र) | रजत – ताम्र |
| सूर्य राशि(पाश्चात्य) | वृश्चिक |

Sample

# पंचांग

दादा का नाम :
पिता का नाम :
माता का नाम :
जाति :
गोत्र :

| कैलेंडर | वर्ष | मास | तिथि/प्रविष्टे |
|---|---|---|---|
| राष्ट्रीय | शक : 1898 | कार्तिक | 30 |
| पंजाबी | संवत : 2033 | मार्गशीर्ष | 7 |
| बंगाली | सन् : 1383 | मार्गशीर्ष | 5 |
| तमिल | संवत : 2033 | कार्तिगई | 6 |
| केरल | कोल्लम : 1152 | वृश्चिकम | 6 |
| नेपाली | संवत : 2033 | मार्गशीर्ष | 6 |
| चैत्रादि | संवत : 2033 | मार्गशीर्ष | कृष्ण 15 |
| कार्तिकादि | संवत : 2033 | कार्तिक | कृष्ण 15 |

**पंचांग**

| | |
|---|---|
| सूर्योदय कालीन तिथि | : 15 |
| तिथि समाप्ति काल | : 20:40:40 |
| जन्म तिथि | : 15 |
| सूर्योदय कालीन नक्षत्र | : विशाखा |
| नक्षत्र समाप्ति काल | : 16:36:31 घंटे |
| जन्म योग | : विशाखा |
| सूर्योदय कालीन योग | : शोभन |
| योग समाप्ति काल | : 13:02:56 घंटे |
| जन्म योग | : अतिगण्ड |
| सूर्योदय कालीन करण | : चतुष्पाद |
| करण समाप्ति काल | : 10:31:28 घंटे |
| जन्म करण | : नाग |
| भयात | : 46:46:52 |
| भभोग | : 52:40:04 |
| भोग्य दशा काल | : गुरु 1 वर्ष 9 मा 14 दि |

**घात चक्र**

| | |
|---|---|
| मास | : आश्विन |
| तिथि | : 1-6-11 |
| दिन | : शुक्रवार |
| नक्षत्र | : रेवती |
| योग | : व्यतिपात |
| करण | : गर |
| प्रहर | : 1 |
| वर्ग | : गरूड़ |
| लग्न | : वृश्चिक |
| सूर्य | : मकर |
| चन्द्र | : वृष |
| मंगल | : कुम्भ |
| बुध | : वृश्चिक |
| गुरु | : मीन |
| शुक्र | : मेष |
| शनि | : कर्क |
| राहु | : वृष |

Sample

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुंडली

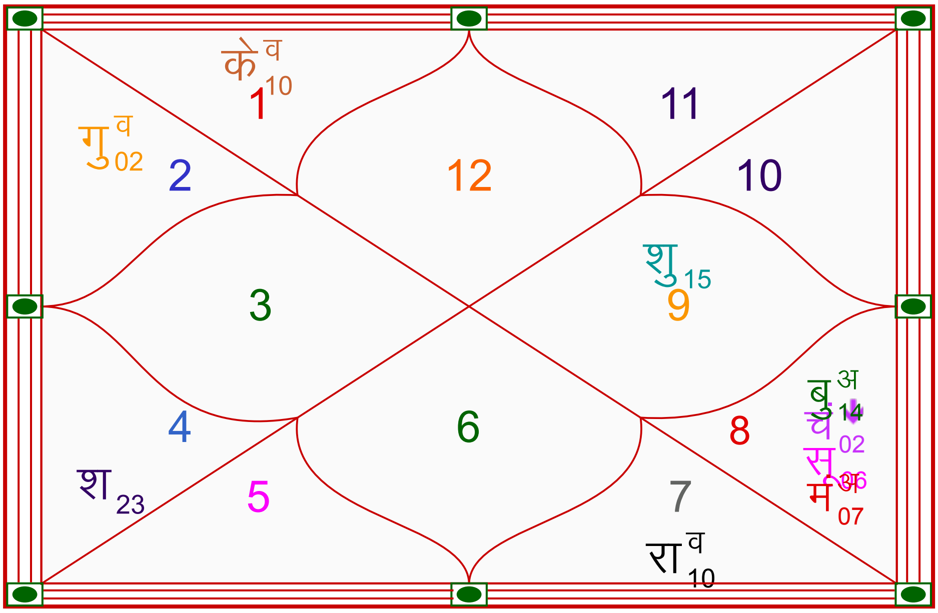


## चन्द्र कुंडली

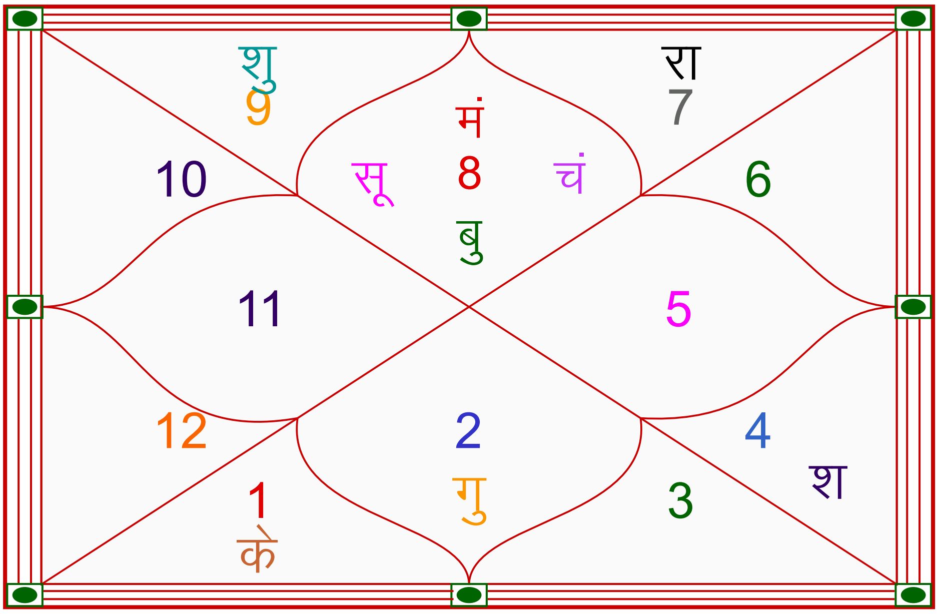

# लग्न कुण्डली और दशा

## लग्न कुंडली

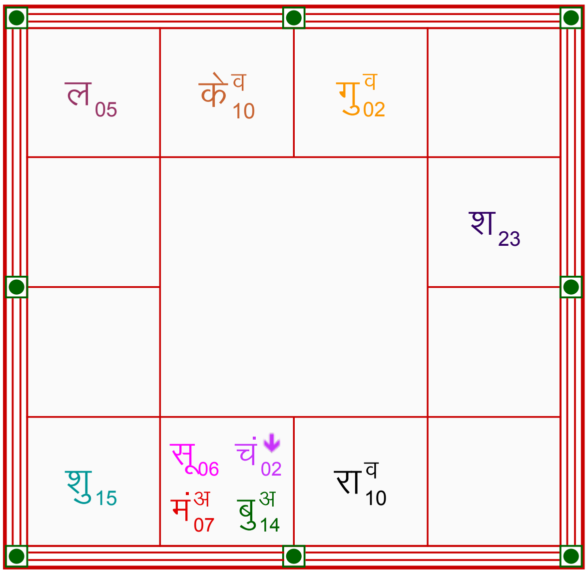


## लग्न कुंडली

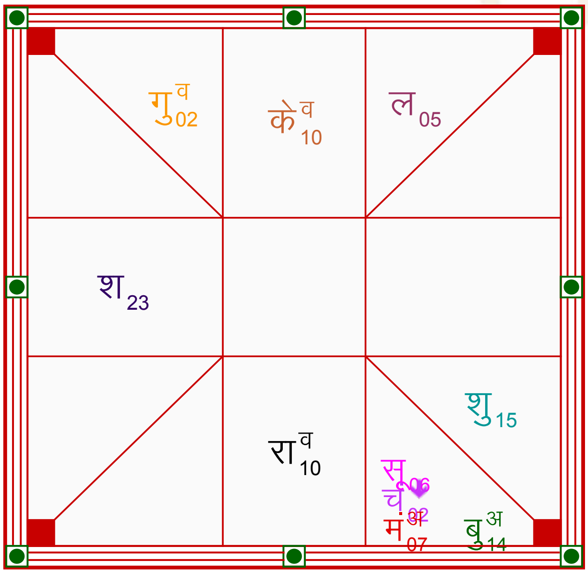


### विंशोत्तरी

**गुरु 1वर्ष 9मा 14दि**

**गुरु**

**21/11/1976**

**06/09/2082**

| | |
|---|---|
| गुरु | 06/09/1978 |
| शनि | 05/09/1997 |
| बुध | 06/09/2014 |
| केतु | 05/09/2021 |
| शुक्र | 05/09/2041 |
| सूर्य | 06/09/2047 |
| चन्द्र | 05/09/2057 |
| मंगल | 05/09/2064 |
| राहु | 06/09/2082 |

### योगिनी

**धान्या 0वर्ष 4मा 0दि**

**उल्का**

**24/03/2022**

**23/03/2028**

| | |
|---|---|
| उल्का | 24/03/2023 |
| सिद्धा | 23/05/2024 |
| संकटा | 22/09/2025 |
| मंगला | 22/11/2025 |
| पिंगला | 24/03/2026 |
| धान्या | 22/09/2026 |
| भ्रामरी | 24/05/2027 |
| भद्रिका | 23/03/2028 |

Sample

# ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

| ग्रह | व | अ | राशि | अंश | गति | नक्षत्र | पद | नं. | रा | न | अं. | स्थिति |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | | | मीन | 05:02:54 | 515:31:37 | उ०भाद्रपद | 1 | 26 | गुरु | शनि | शनि | ––– |
| सूर्य | | | वृश्चि | 05:38:17 | 01:00:38 | अनुराधा | 1 | 17 | मंगल | शनि | बुध | मित्र राशि |
| चंद्र | | | वृश्चि | 01:50:33 | 15:11:47 | विशाखा | 4 | 16 | मंगल | गुरु | राहु | नीच राशि |
| मंगल | | अ | वृश्चि | 06:43:39 | 00:42:52 | अनुराधा | 2 | 17 | मंगल | शनि | बुध | स्वराशि |
| बुध | | अ | वृश्चि | 13:34:22 | 01:32:51 | अनुराधा | 4 | 17 | मंगल | शनि | राहु | सम राशि |
| गुरु | व | | वृष | 02:10:33 | 00:08:09 | कृतिका | 2 | 3 | शुक्र | सूर्य | गुरु | शत्रु राशि |
| शुक्र | | | धनु | 14:47:49 | 01:12:07 | पूर्वाषाढ़ा | 1 | 20 | गुरु | शुक्र | शुक्र | सम राशि |
| शनि | | | कर्क | 23:18:10 | 00:00:44 | आश्लेषा | 2 | 9 | चंद्र | बुध | चंद्र | शत्रु राशि |
| राहु | व | | तुला | 09:54:10 | 00:01:53 | स्वाति | 1 | 15 | शुक्र | राहु | गुरु | मित्र राशि |
| केतु | व | | मेष | 09:54:10 | 00:01:53 | अश्विनी | 3 | 1 | मंगल | केतु | शनि | मित्र राशि |
| हर्ष | | | तुला | 15:16:36 | 00:03:35 | स्वाति | 3 | 15 | शुक्र | राहु | शुक्र | ––– |
| नेप | | | वृश्चि | 19:36:48 | 00:02:13 | ज्येष्ठा | 1 | 18 | मंगल | बुध | शुक्र | ––– |
| प्लूटो | | | कन्या | 19:46:18 | 00:01:47 | हस्त | 3 | 13 | बुध | चंद्र | केतु | ––– |
| दशम भाव | | | धनु | 05:33:16 | -- | मूल | -- | 19 | गुरु | केतु | मंगल | -- |

**व – वक्री स – स्थिर**

**अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त**

**राहु : स्पष्ट**

**चित्रपक्षीय अयनांश : 23:32:11**

## लग्न–चलित

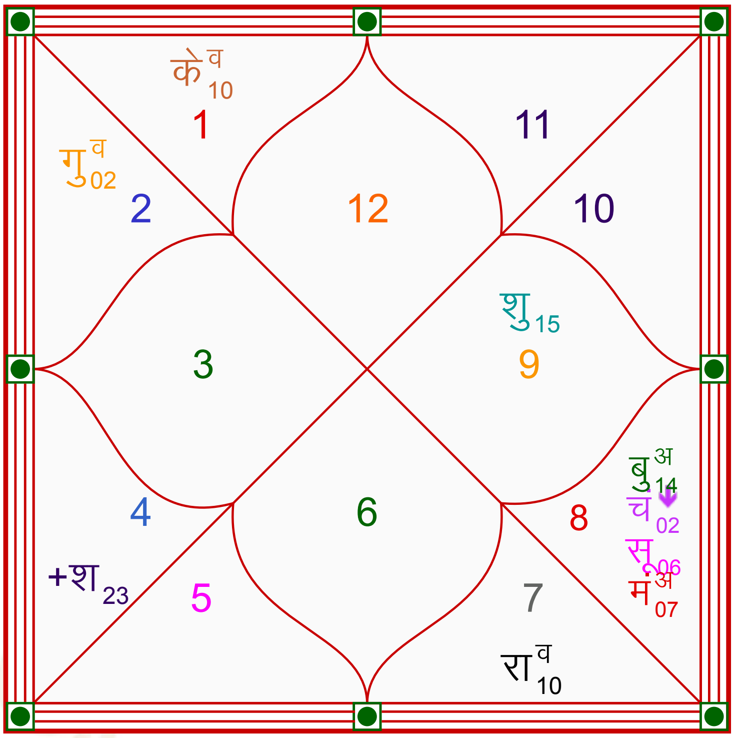


## चन्द्र कुंडली

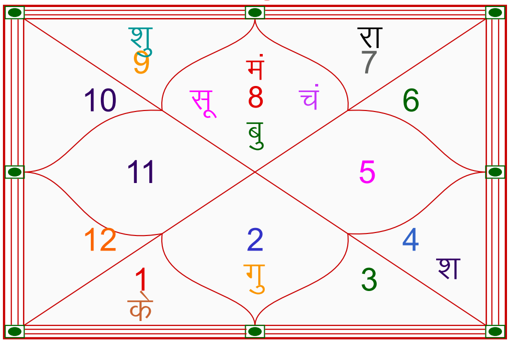


## नवमांश कुंडली

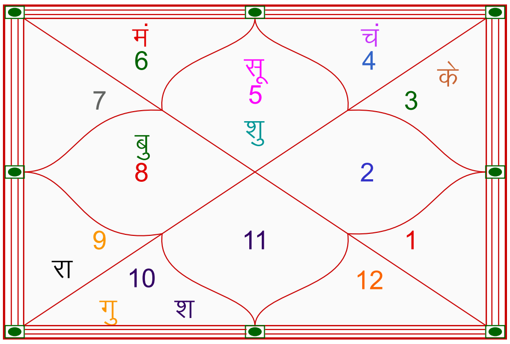

Sample

# चलित तथा निरयण भाव चलित

## चलित अंश

## निरयण भाव चलित

| भाव | भाव संधि | | भाव मध्य | | भाव | राशि | अंश |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | कुम्भ | 20:07:58 | मीन | 05:02:54 | 1 | मीन | 05:02:54 |
| 2 | मीन | 20:07:58 | मेष | 05:13:02 | 2 | मेष | 12:53:16 |
| 3 | मेष | 20:18:05 | वृष | 05:23:09 | 3 | वृष | 11:28:47 |
| 4 | वृष | 20:28:13 | मिथुन | 05:33:16 | 4 | मिथुन | 05:33:16 |
| 5 | मिथुन | 20:28:13 | कर्क | 05:23:09 | 5 | मिथुन | 29:30:17 |
| 6 | कर्क | 20:18:05 | सिंह | 05:13:02 | 6 | कर्क | 27:42:04 |
| 7 | सिंह | 20:07:58 | कन्या | 05:02:54 | 7 | कन्या | 05:02:54 |
| 8 | कन्या | 20:07:58 | तुला | 05:13:02 | 8 | तुला | 12:53:16 |
| 9 | तुला | 20:18:05 | वृश्चिक | 05:23:09 | 9 | वृश्चिक | 11:28:47 |
| 10 | वृश्चिक | 20:28:13 | धनु | 05:33:16 | 10 | धनु | 05:33:16 |
| 11 | धनु | 20:28:13 | मकर | 05:23:09 | 11 | धनु | 29:30:17 |
| 12 | मकर | 20:18:05 | कुम्भ | 05:13:02 | 12 | मकर | 27:42:04 |

## तारा चक्र

| जन्म | सम्पत | विपत | क्षेम | प्रत्यारि | साधक | वध | मित्र | अतिमित्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| विशाखा | अनुराधा | ज्येष्ठा | मूल | पूर्वाषाढ़ा | उत्तराषाढ़ा | श्रवण | धनिष्ठा | शतभिषा |
| पू०भाद्रपद | उ०भाद्रपद | रेवती | अश्विनी | भरणी | कृतिका | रोहिणी | मृगशिरा | आर्द्रा |
| पुनर्वसु | पुष्य | आश्लेषा | मघा | पू०फाल्गुनी | उ०फाल्गुनी | हस्त | चित्रा | स्वाति |

## चलित कुंडली

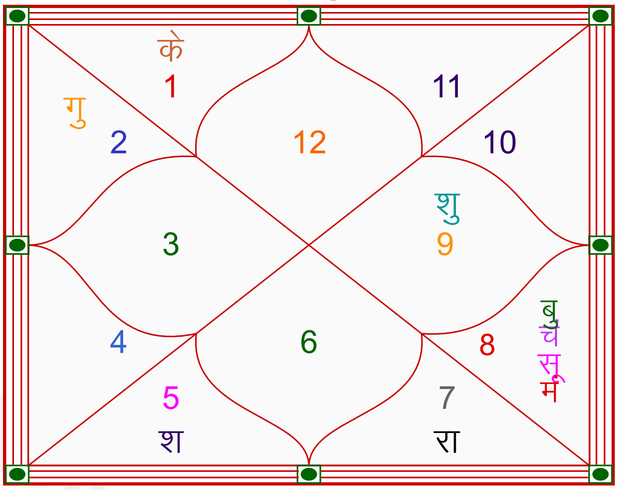


## भाव कुंडली

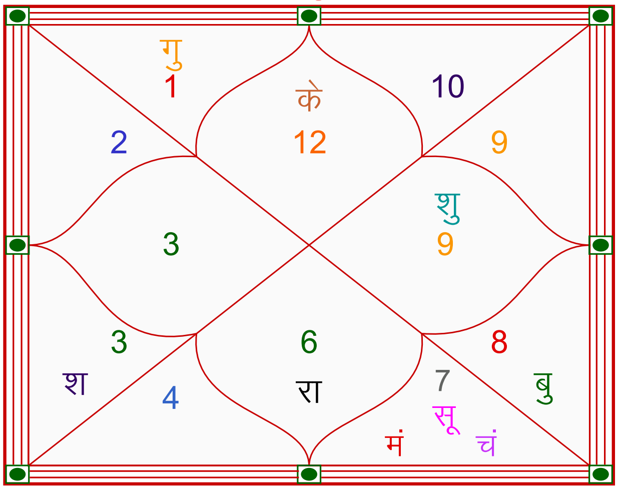


**Astroinsight**
Delhi NCR
www.astroinsight.in
E-mail : support@astroinsight.in

Sample

# कारक,अवस्था,रश्मि

| ग्रह | ------ कारक ------ | | ---------- अवस्था ---------- | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | चर | स्थिर | बालादि | दीप्तादि | शयनादि | रश्मि | ग्रह बल |
| सूर्य | पुत्र | पितृ | मृत | मुदित | आगम | 1.42 | 78 % |
| चंद्र | कलत्र | मातृ | मृत | भीत | आगमन | 0.03 | 35 % |
| मंगल | मातृ | भ्रातृ | वृद्ध | विकल | सभा | 0.00 | 52 % |
| बुध | भ्रातृ | ज्ञाति | युवा | विकल | उपवेशन | 0.00 | 40 % |
| गुरु | ज्ञाति | धन | मृत | खल | शयन | 1.82 | 24 % |
| शुक्र | अमात्य | कलत्र | युवा | निपीदित | नृत्यलिप्सा | 1.73 | 25 % |
| शनि | आत्मा | आयु | कुमार | खल | सभा | 1.04 | 58 % |
| राहु | ---- | ज्ञान | कुमार | मुदित | नृत्यलिप्सा | 0.00 | 68 % |
| केतु | ---- | मोक्ष | कुमार | मुदित | शयन | 0.00 | 68 % |
| **कुल** | | | | | | **6.04** | |

## तारा चक्र

| जन्म | सम्पत | विपत | क्षेम | प्रत्यारि | साधक | वध | मित्र | अतिमित्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| विशाखा | अनुराधा | ज्येष्ठा | मूल | पूर्वाषाढ़ा | उत्तराषाढ़ा | श्रवण | धनिष्ठा | शतभिषा |
| पू०भाद्रपद | उ०भाद्रपद | रेवती | अश्विनी | भरणी | कृतिका | रोहिणी | मृगशिरा | आर्द्रा |
| पुनर्वसु | पुष्य | आश्लेषा | मघा | पू०फाल्गुनी | उ०फाल्गुनी | हस्त | चित्रा | स्वाति |

## चलित कुंडली

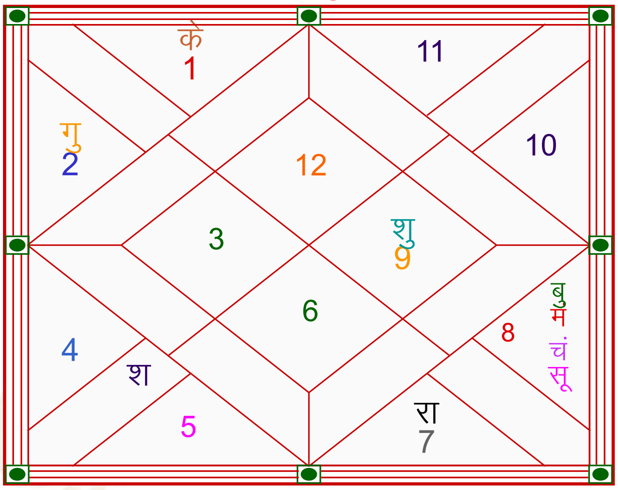


## लग्न–चलित

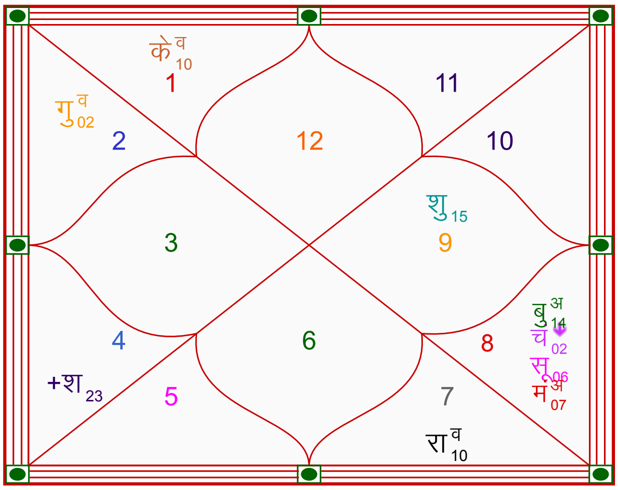

# विंशोत्तरी दशा

## भोग्य दशा काल : गुरु 1 वर्ष 9 मास 14 दिन

| गुरु 16 वर्ष | | शनि 19 वर्ष | | बुध 17 वर्ष | | केतु 7 वर्ष | | शुक्र 20 वर्ष | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 21/11/1976 | | 06/09/1978 | | 05/09/1997 | | 06/09/2014 | | 05/09/2021 | |
| 06/09/1978 | | 05/09/1997 | | 06/09/2014 | | 05/09/2021 | | 05/09/2041 | |
| | 00/00/0000 | शनि | 08/09/1981 | बुध | 02/02/2000 | केतु | 02/02/2015 | शुक्र | 05/01/2025 |
| | 00/00/0000 | बुध | 18/05/1984 | केतु | 29/01/2001 | शुक्र | 03/04/2016 | सूर्य | 05/01/2026 |
| | 00/00/0000 | केतु | 27/06/1985 | शुक्र | 30/11/2003 | सूर्य | 09/08/2016 | चंद्र | 06/09/2027 |
| | 00/00/0000 | शुक्र | 27/08/1988 | सूर्य | 05/10/2004 | चंद्र | 10/03/2017 | मंगल | 05/11/2028 |
| | 00/00/0000 | सूर्य | 09/08/1989 | चंद्र | 07/03/2006 | मंगल | 06/08/2017 | राहु | 06/11/2031 |
| | 00/00/0000 | चंद्र | 10/03/1991 | मंगल | 04/03/2007 | राहु | 24/08/2018 | गुरु | 07/07/2034 |
| | 00/00/0000 | मंगल | 18/04/1992 | राहु | 20/09/2009 | गुरु | 31/07/2019 | शनि | 05/09/2037 |
| | 21/11/1976 | राहु | 23/02/1995 | गुरु | 27/12/2011 | शनि | 08/09/2020 | बुध | 06/07/2040 |
| राहु | 06/09/1978 | गुरु | 05/09/1997 | शनि | 06/09/2014 | बुध | 05/09/2021 | केतु | 05/09/2041 |

| सूर्य 6 वर्ष | | चंद्र 10 वर्ष | | मंगल 7 वर्ष | | राहु 18 वर्ष | | गुरु 16 वर्ष | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 05/09/2041 | | 06/09/2047 | | 05/09/2057 | | 05/09/2064 | | 06/09/2082 | |
| 06/09/2047 | | 05/09/2057 | | 05/09/2064 | | 06/09/2082 | | 21/11/2096 | |
| सूर्य | 24/12/2041 | चंद्र | 06/07/2048 | मंगल | 01/02/2058 | राहु | 19/05/2067 | गुरु | 24/10/2084 |
| चंद्र | 24/06/2042 | मंगल | 04/02/2049 | राहु | 20/02/2059 | गुरु | 12/10/2069 | शनि | 07/05/2087 |
| मंगल | 30/10/2042 | राहु | 06/08/2050 | गुरु | 27/01/2060 | शनि | 18/08/2072 | बुध | 12/08/2089 |
| राहु | 24/09/2043 | गुरु | 06/12/2051 | शनि | 07/03/2061 | बुध | 07/03/2075 | केतु | 19/07/2090 |
| गुरु | 12/07/2044 | शनि | 06/07/2053 | बुध | 04/03/2062 | केतु | 25/03/2076 | शुक्र | 19/03/2093 |
| शनि | 24/06/2045 | बुध | 06/12/2054 | केतु | 31/07/2062 | शुक्र | 25/03/2079 | सूर्य | 05/01/2094 |
| बुध | 01/05/2046 | केतु | 07/07/2055 | शुक्र | 30/09/2063 | सूर्य | 17/02/2080 | चंद्र | 07/05/2095 |
| केतु | 06/09/2046 | शुक्र | 07/03/2057 | सूर्य | 05/02/2064 | चंद्र | 18/08/2081 | मंगल | 12/04/2096 |
| शुक्र | 06/09/2047 | सूर्य | 05/09/2057 | चंद्र | 05/09/2064 | मंगल | 06/09/2082 | राहु | 21/11/2096 |

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 1 वर्ष 9 मा 14 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

# विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| शुक्र - सूर्य | | शुक्र - चंद्र | | शुक्र - मंगल | | शुक्र - राहु | | शुक्र - गुरु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 05/01/2025 | | 05/01/2026 | | 06/09/2027 | | 05/11/2028 | | 06/11/2031 | |
| 05/01/2026 | | 06/09/2027 | | 05/11/2028 | | 06/11/2031 | | 07/07/2034 | |
| सूर्य | 23/01/2025 | चंद्र | 25/02/2026 | मंगल | 01/10/2027 | राहु | 18/04/2029 | गुरु | 14/03/2032 |
| चंद्र | 22/02/2025 | मंगल | 01/04/2026 | राहु | 04/12/2027 | गुरु | 11/09/2029 | शनि | 16/08/2032 |
| मंगल | 16/03/2025 | राहु | 02/07/2026 | गुरु | 29/01/2028 | शनि | 04/03/2030 | बुध | 01/01/2033 |
| राहु | 10/05/2025 | गुरु | 21/09/2026 | शनि | 06/04/2028 | बुध | 06/08/2030 | केतु | 27/02/2033 |
| गुरु | 27/06/2025 | शनि | 26/12/2026 | बुध | 05/06/2028 | केतु | 09/10/2030 | शुक्र | 08/08/2033 |
| शनि | 24/08/2025 | बुध | 22/03/2027 | केतु | 30/06/2028 | शुक्र | 10/04/2031 | सूर्य | 26/09/2033 |
| बुध | 15/10/2025 | केतु | 27/04/2027 | शुक्र | 09/09/2028 | सूर्य | 03/06/2031 | चंद्र | 16/12/2033 |
| केतु | 05/11/2025 | शुक्र | 06/08/2027 | सूर्य | 30/09/2028 | चंद्र | 03/09/2031 | मंगल | 11/02/2034 |
| शुक्र | 05/01/2026 | सूर्य | 06/09/2027 | चंद्र | 05/11/2028 | मंगल | 06/11/2031 | राहु | 07/07/2034 |

| शुक्र - शनि | | शुक्र - बुध | | शुक्र - केतु | | सूर्य - सूर्य | | सूर्य - चंद्र | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 07/07/2034 | | 05/09/2037 | | 06/07/2040 | | 05/09/2041 | | 24/12/2041 | |
| 05/09/2037 | | 06/07/2040 | | 05/09/2041 | | 24/12/2041 | | 24/06/2042 | |
| शनि | 06/01/2035 | बुध | 30/01/2038 | केतु | 31/07/2040 | सूर्य | 11/09/2041 | चंद्र | 08/01/2042 |
| बुध | 19/06/2035 | केतु | 31/03/2038 | शुक्र | 10/10/2040 | चंद्र | 20/09/2041 | मंगल | 19/01/2042 |
| केतु | 25/08/2035 | शुक्र | 20/09/2038 | सूर्य | 31/10/2040 | मंगल | 26/09/2041 | राहु | 15/02/2042 |
| शुक्र | 05/03/2036 | सूर्य | 10/11/2038 | चंद्र | 06/12/2040 | राहु | 13/10/2041 | गुरु | 11/03/2042 |
| सूर्य | 02/05/2036 | चंद्र | 05/02/2039 | मंगल | 31/12/2040 | गुरु | 27/10/2041 | शनि | 09/04/2042 |
| चंद्र | 06/08/2036 | मंगल | 06/04/2039 | राहु | 05/03/2041 | शनि | 14/11/2041 | बुध | 05/05/2042 |
| मंगल | 13/10/2036 | राहु | 08/09/2039 | गुरु | 30/04/2041 | बुध | 29/11/2041 | केतु | 16/05/2042 |
| राहु | 04/04/2037 | गुरु | 24/01/2040 | शनि | 07/07/2041 | केतु | 06/12/2041 | शुक्र | 15/06/2042 |
| गुरु | 05/09/2037 | शनि | 06/07/2040 | बुध | 05/09/2041 | शुक्र | 24/12/2041 | सूर्य | 24/06/2042 |

| सूर्य - मंगल | | सूर्य - राहु | | सूर्य - गुरु | | सूर्य - शनि | | सूर्य - बुध | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 24/06/2042 | | 30/10/2042 | | 24/09/2043 | | 12/07/2044 | | 24/06/2045 | |
| 30/10/2042 | | 24/09/2043 | | 12/07/2044 | | 24/06/2045 | | 01/05/2046 | |
| मंगल | 02/07/2042 | राहु | 19/12/2042 | गुरु | 02/11/2043 | शनि | 05/09/2044 | बुध | 07/08/2045 |
| राहु | 21/07/2042 | गुरु | 31/01/2043 | शनि | 18/12/2043 | बुध | 24/10/2044 | केतु | 25/08/2045 |
| गुरु | 07/08/2042 | शनि | 24/03/2043 | बुध | 29/01/2044 | केतु | 14/11/2044 | शुक्र | 16/10/2045 |
| शनि | 27/08/2042 | बुध | 10/05/2043 | केतु | 15/02/2044 | शुक्र | 10/01/2045 | सूर्य | 01/11/2045 |
| बुध | 14/09/2042 | केतु | 29/05/2043 | शुक्र | 03/04/2044 | सूर्य | 28/01/2045 | चंद्र | 26/11/2045 |
| केतु | 22/09/2042 | शुक्र | 23/07/2043 | सूर्य | 18/04/2044 | चंद्र | 26/02/2045 | मंगल | 15/12/2045 |
| शुक्र | 13/10/2042 | सूर्य | 08/08/2043 | चंद्र | 12/05/2044 | मंगल | 18/03/2045 | राहु | 30/01/2046 |
| सूर्य | 20/10/2042 | चंद्र | 05/09/2043 | मंगल | 29/05/2044 | राहु | 09/05/2045 | गुरु | 13/03/2046 |
| चंद्र | 30/10/2042 | मंगल | 24/09/2043 | राहु | 12/07/2044 | गुरु | 24/06/2045 | शनि | 01/05/2046 |

# विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| सूर्य - केतु | | सूर्य - शुक्र | | चंद्र - चंद्र | | चंद्र - मंगल | | चंद्र - राहु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 01/05/2046 | | 06/09/2046 | | 06/09/2047 | | 06/07/2048 | | 04/02/2049 | |
| 06/09/2046 | | 06/09/2047 | | 06/07/2048 | | 04/02/2049 | | 06/08/2050 | |
| केतु | 08/05/2046 | शुक्र | 05/11/2046 | चंद्र | 01/10/2047 | मंगल | 19/07/2048 | राहु | 27/04/2049 |
| शुक्र | 29/05/2046 | सूर्य | 24/11/2046 | मंगल | 19/10/2047 | राहु | 20/08/2048 | गुरु | 09/07/2049 |
| सूर्य | 05/06/2046 | चंद्र | 24/12/2046 | राहु | 04/12/2047 | गुरु | 17/09/2048 | शनि | 04/10/2049 |
| चंद्र | 15/06/2046 | मंगल | 14/01/2047 | गुरु | 13/01/2048 | शनि | 21/10/2048 | बुध | 21/12/2049 |
| मंगल | 23/06/2046 | राहु | 10/03/2047 | शनि | 01/03/2048 | बुध | 20/11/2048 | केतु | 22/01/2050 |
| राहु | 12/07/2046 | गुरु | 28/04/2047 | बुध | 13/04/2048 | केतु | 02/12/2048 | शुक्र | 23/04/2050 |
| गुरु | 29/07/2046 | शनि | 25/06/2047 | केतु | 01/05/2048 | शुक्र | 07/01/2049 | सूर्य | 20/05/2050 |
| शनि | 18/08/2046 | बुध | 15/08/2047 | शुक्र | 21/06/2048 | सूर्य | 17/01/2049 | चंद्र | 05/07/2050 |
| बुध | 06/09/2046 | केतु | 06/09/2047 | सूर्य | 06/07/2048 | चंद्र | 04/02/2049 | मंगल | 06/08/2050 |

| चंद्र - गुरु | | चंद्र - शनि | | चंद्र - बुध | | चंद्र - केतु | | चंद्र - शुक्र | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 06/08/2050 | | 06/12/2051 | | 06/07/2053 | | 06/12/2054 | | 07/07/2055 | |
| 06/12/2051 | | 06/07/2053 | | 06/12/2054 | | 07/07/2055 | | 07/03/2057 | |
| गुरु | 10/10/2050 | शनि | 07/03/2052 | बुध | 18/09/2053 | केतु | 18/12/2054 | शुक्र | 16/10/2055 |
| शनि | 26/12/2050 | बुध | 28/05/2052 | केतु | 18/10/2053 | शुक्र | 23/01/2055 | सूर्य | 16/11/2055 |
| बुध | 05/03/2051 | केतु | 30/06/2052 | शुक्र | 12/01/2054 | सूर्य | 02/02/2055 | चंद्र | 06/01/2056 |
| केतु | 03/04/2051 | शुक्र | 05/10/2052 | सूर्य | 07/02/2054 | चंद्र | 20/02/2055 | मंगल | 10/02/2056 |
| शुक्र | 23/06/2051 | सूर्य | 03/11/2052 | चंद्र | 22/03/2054 | मंगल | 05/03/2055 | राहु | 11/05/2056 |
| सूर्य | 17/07/2051 | चंद्र | 21/12/2052 | मंगल | 21/04/2054 | राहु | 06/04/2055 | गुरु | 31/07/2056 |
| चंद्र | 27/08/2051 | मंगल | 24/01/2053 | राहु | 08/07/2054 | गुरु | 04/05/2055 | शनि | 05/11/2056 |
| मंगल | 24/09/2051 | राहु | 20/04/2053 | गुरु | 15/09/2054 | शनि | 07/06/2055 | बुध | 30/01/2057 |
| राहु | 06/12/2051 | गुरु | 06/07/2053 | शनि | 06/12/2054 | बुध | 07/07/2055 | केतु | 07/03/2057 |

| चंद्र - सूर्य | | मंगल - मंगल | | मंगल - राहु | | मंगल - गुरु | | मंगल - शनि | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 07/03/2057 | | 05/09/2057 | | 01/02/2058 | | 20/02/2059 | | 27/01/2060 | |
| 05/09/2057 | | 01/02/2058 | | 20/02/2059 | | 27/01/2060 | | 07/03/2061 | |
| सूर्य | 16/03/2057 | मंगल | 14/09/2057 | राहु | 31/03/2058 | गुरु | 06/04/2059 | शनि | 31/03/2060 |
| चंद्र | 31/03/2057 | राहु | 06/10/2057 | गुरु | 21/05/2058 | शनि | 30/05/2059 | बुध | 27/05/2060 |
| मंगल | 11/04/2057 | गुरु | 26/10/2057 | शनि | 21/07/2058 | बुध | 18/07/2059 | केतु | 20/06/2060 |
| राहु | 08/05/2057 | शनि | 19/11/2057 | बुध | 13/09/2058 | केतु | 07/08/2059 | शुक्र | 26/08/2060 |
| गुरु | 01/06/2057 | बुध | 10/12/2057 | केतु | 05/10/2058 | शुक्र | 02/10/2059 | सूर्य | 16/09/2060 |
| शनि | 30/06/2057 | केतु | 19/12/2057 | शुक्र | 08/12/2058 | सूर्य | 19/10/2059 | चंद्र | 19/10/2060 |
| बुध | 26/07/2057 | शुक्र | 13/01/2058 | सूर्य | 28/12/2058 | चंद्र | 17/11/2059 | मंगल | 12/11/2060 |
| केतु | 06/08/2057 | सूर्य | 20/01/2058 | चंद्र | 29/01/2059 | मंगल | 07/12/2059 | राहु | 12/01/2061 |
| शुक्र | 05/09/2057 | चंद्र | 01/02/2058 | मंगल | 20/02/2059 | राहु | 27/01/2060 | गुरु | 07/03/2061 |

Sample

# शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

| | |
|---|---|
| मूलांक | 3 |
| भाग्यांक | 1 |
| मित्र अंक | 3, 5, 7, 9, 1 |
| शत्रु अंक | 4, 8 |
| शुभ वर्ष | 21,30,39,48,57 |
| शुभ दिन | सोम, मंगल, गुरु |
| शुभ ग्रह | चन्द्र, मंगल, गुरु |
| मित्र राशि | कर्क, सिंह |
| मित्र लग्न | मिथुन, वृश्चिक, मकर |
| अनुकूल देवता | शिव |
| शुभ रत्न | पुखराज |
| शुभ उपरत्न | सुनहला, पीला हकीक |
| भाग्य रत्न | मूंगा |
| शुभ धातु | कांसा |
| शुभ रंग | पीत |
| शुभ दिशा | पूर्वोत्तर |
| शुभ समय | संध्या |
| दान पदार्थ | हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प |
| दान अन्न | दाल चना |
| दान द्रव्य | घी |

# ग्रह फल

## सूर्य

नवमभाव में सूर्य होतो जातक साहसी, ज्योतिषी, नेता सदाचारी, तपस्वीयोगी, वाहनसुख, भृत्यसुख एवं पिता के लिए अशुभ होता है।

वृश्चिक राशि में रवि हो तो जातक साहसी, लोभी, चिकित्सक, लोकमान्य, क्रोधी उद्ययोगी, उदररोगी, पुलिस अधिकारी एवं सेना में उच्चपद प्राप्त करने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

## चन्द्र

नवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, विद्याप्रिय, चंचल, न्यायी, प्रवास–प्रिय, कार्यशील,धर्मात्मा. सन्तति–सम्पत्तियुक्त सुखी, साहसी एवं अल्पभ्रातृवान् होता है।

वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो जातक अपने माता–पिता, भाइयों आदि से अलग रहने वला, नास्तिक, लोभी, बन्धुहीन, परस्त्रीरत, झगड़ालू, स्पष्ट वक्ता, बुरे विचार रखने वाले, दुःखी, हठी, अनैतिक विचारों वाला एवं धनी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। आपके शुभ प्रभाव से उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपकी सुख संसाधनों के प्रति वे चिन्तित रहेंगी तथा प्रयत्न पूर्वक आपको इन सुख संसाधनों का उपभोग करायेंगी। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा। इसके अतिरिक्त उन्हीं की सहायता एवं सहयोग से आप आवश्यक सुखसंसाधनों को भी प्राप्त करेंगे।

आप भी उनके आज्ञाकारी होंगे तथा पूर्ण रूप से उनका हार्दिक सम्मान करेंगे। जीवन में उनको पूर्ण सुख सुविधा प्रदान करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी

मधुर होंगे तथा यदा कदा ही कोई मतभेद रहेंगे अन्यथा एक दूसरें से सहमत ही रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए सामान्य शुभ रहेंगे।

## मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति–दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थाई रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

## बुध

नवमभाव में बुध हो तो जातक विद्वान् लेखक, ज्योतिषी, धर्मभीरु, व्यवसाय प्रिय, भाग्यवान्, सम्पादक, गवैया, कवि एवं सदाचारी होता है।

वृश्चिक राशि में बुध हो तो जातक व्यसनी, दुराचारी, मुर्ख, ऋणी भिक्षुक, अनैतिक चरित्र, रतिक्रिया की अति करने वाला, गुप्तांगों के रोगों से पीड़ित, स्वार्थी एवं अपशब्द बोलने वाला होता है।

## गुरु

तृतीयभाव में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, जितेन्द्रिय, लेखक, कामी, प्रवासी, स्त्रीप्रिय, व्यवसायी, मन्दाग्नि, वाहनयुक्त, पर्यटनशील, विदेशप्रिय, ऐश्वर्यवान बहुत भाई बहन, आस्तिक एवं योगी होता है।

वृष राशि में गुरु हो तो जातक पुष्टशरीर वाला, सदाचारी, धनवान्, आस्तिक, चिकित्सक, विद्वान, बुद्धिमान्, जीवन में स्थिरता, दृढ़विचार, दिखावा करने वाला एवं कामुक होता

है।

## शुक्र

दशम भाव में शुक्र हो तो जातक गुणवान्, दायालु, विलासी, ऐश्वर्यवान्, भाग्यवान्, न्यायवान् विजयी, गानप्रिय, धार्मिक ज्योतिषी एवं लोभी होता है।

धनु राशि में शुक्र हो तो जातक धनी, बलशाली, स्वोपार्जित द्रव्य द्वारा पुण्य करने वाला, विद्वान, सुन्दर, लोकमान्य, राज्यमान्य, सुखी घरेलू जीवन, उच्चपद की प्राप्ति एवं प्रभावशाली होता है।

## शनि

पंचम भाव में शनि हो तो जातक आलसी, सन्तानयुक्त, चंचल, उदासीन, विद्वान, भ्रमणशील एवं बातरोगी होता है।

कर्क राशि में शनि हो तो जातक, गरीब, कमसन्तान, बाल्यावस्था में दुखी, मातृरहित, प्राज्ञ, उन्नतिशील, विद्वान, हठी एवं स्वार्थी होता है।

## राहु

अष्टम भाव में राहु हो तो जातक क्रोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, उदररोगी, कामी, पुष्टदेही एवं गुप्तरोगी होता है।

तुला राशि में राहु हो तो जातक अल्पायु, दाँतों के रोग, विरासत में धन पाने वाला एवं कार्य कुशल होता है।

## केतु

द्वितीय भाव में केतु हो तो जातक अस्वस्था, कटुवचन बोलने वाला, मुंह के रोग, राजभीरु एवं विद्रोही होता है।

मेष राशि में केतु  हो तो जातक चंचल, बहुभाषी एवं सुखी होता है।

Sample

# साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता–पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

### प्रथम चक्रः

| | | | |
|---|---|---|---|
| साढेसाती प्रथम ढैया | 06/10/1982-21/12/1984 | 01/06/1985-17/09/1985 | ------------------------- |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | 21/12/1984-01/06/1985 | 17/09/1985-17/12/1987 | ------------------------- |
| साढेसाती तृतीय ढैया | 17/12/1987-21/03/1990 | 20/06/1990-15/12/1990 | ------------------------- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 05/03/1993-15/10/1993 | 10/11/1993-02/06/1995 | 10/08/1995-16/02/1996 |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 23/07/2002-08/01/2003 | 07/04/2003-06/09/2004 | 13/01/2005-26/05/2005 |

### द्वितीय चक्रः

| | | | |
|---|---|---|---|
| साढेसाती प्रथम ढैया | 15/11/2011-16/05/2012 | 04/08/2012-02/11/2014 | ------------------------- |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | 02/11/2014-26/01/2017 | 21/06/2017-26/10/2017 | ------------------------- |
| साढेसाती तृतीय ढैया | 26/01/2017-21/06/2017 | 26/10/2017-24/01/2020 | ------------------------- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 29/04/2022-12/07/2022 | 17/01/2023-29/03/2025 | ------------------------- |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 31/05/2032-13/07/2034 | ------------------------- | ------------------------- |

### तृतीय चक्रः

| | | | |
|---|---|---|---|
| साढेसाती प्रथम ढैया | 28/01/2041-06/02/2041 | 26/09/2041-11/12/2043 | 23/06/2044-30/08/2044 |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | 11/12/2043-23/06/2044 | 30/08/2044-08/12/2046 | ------------------------- |
| साढेसाती तृतीय ढैया | 08/12/2046-06/03/2049 | 10/07/2049-04/12/2049 | ------------------------- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 25/02/2052-14/05/2054 | 02/09/2054-05/02/2055 | ------------------------- |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 11/07/2061-13/02/2062 | 07/03/2062-24/08/2063 | 06/02/2064-09/05/2064 |

### शनि का ढैया फल

| ढैया के प्रकार | फल | क्षेत्र |
|---|---|---|
| साढेसाती प्रथम ढैया | सम | दुर्घटना से बचाव |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | सम | बदनामी |
| साढेसाती तृतीय ढैया | शुभ | व्यावसाय |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | सम | कम खर्च |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | सम | सुख |

# साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म–पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।**
**उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।